**UNIT 1 शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवम् परिभाषा**

**मनोविज्ञान का अर्थ :-**
मनोविज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ ‘मन का विज्ञान’ है। मनोविज्ञान शब्द का अंग्रेजी समानार्थक शब्द “Psychology” (साइकोलॉजी) है जो की यूनानी (ग्रीक) भाषा के दो शब्दों “Psyche”(साइके) और “Logos”(लोगास) के मिलने से बना है। Psyche (साइके) शब्द का अर्थ “आत्मा” और Logos (लोगास) शब्द का अर्थ होता है “अध्ययन”। अतः Psychology का शाब्दिक अर्थ है – “आत्मा का अध्ययन”।

**मनोविज्ञान की परिभाषायें :-**1. वाटसन के अनुसार, “ मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित या शुद्ध विज्ञान है।”
2. वुडवर्थ के अनुसार, “ मनोविज्ञान, वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव व्यवहारों का विज्ञान है।”
3. मैक्डूगल के अनुसार, “ मनोविज्ञान, आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।”
4. क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, “ मनोविज्ञान मानव – व्यवहार और मानव सम्बन्धों का अध्ययन है।”
5. बोरिंग के अनुसार, “ मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।”
6. स्किनर के अनुसार, “ मनोविज्ञान, व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।”
7. मन के अनुसार, “आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से है।”
8. गैरिसन व अन्य के अनुसार, “ मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष मानव – व्यवहार से है।”
9. गार्डनर मर्फी के अनुसार, “ मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जो जीवित व्यक्तियों का उनके वातावरण के प्रति अनुक्रियाओं का अध्ययन करता है।”
**क्रमशः मनोविज्ञान के अर्थ में परिवर्तन :-**
प्रारम्भिक अवस्था में मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में था लेकिन दर्शनशास्त्र से अलग होने के बाद इसका एक स्वतंत्र विषय के रूप में उदय हुआ। दर्शनशास्त्र से अलग होने की प्रक्रिया में मनोविज्ञान ने अनेक अर्थ ग्रहण किए जिन्हें हम निम्न प्रकार से समझ सकते है :-

**1. आत्मा का विज्ञान :-** 16 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान कहा गया। इस अर्थ के प्रबल समर्थक प्लेटो, अरस्तु, डेकार्टे आदि दार्शनिक मनोवैज्ञानिक थे। लेकिन आत्मा क्या है? इसकी प्रकृति या स्वरुप क्या है? क्या इसे देखा जा सकता है? मनोवैज्ञानिकों द्वारा इन प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थता के कारण इस परिभाषा को अस्वीकार कर दिया गया।

**2. मन का विज्ञान :-** 17 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान कहा गया। इस अर्थ का प्रबल समर्थक पाॅम्पोनाजी था। लेकिन मन या मस्तिष्क क्या है? इसका अध्ययन किस प्रकार किया जा सकता है? इन प्रश्नों के अर्थों को स्पष्ट नहीं कर पाने के कारण मनोविज्ञान का यह अर्थ भी अस्वीकार कर दिया गया।

**3. चेतना का विज्ञान :-** 19 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा गया। इस अर्थ के प्रबल समर्थक विलियम जेम्स, विलियम वुंट, वाईव्स आदि मनोवैज्ञानिक प्रमुख थे। इन्होंने केवल चेतन मन की ही बात की है, जबकि फ्रायड ने मनोविश्लेषण वाद में चेतन मन के अलावा अचेतन व अर्द्ध चेतन मन के बारे में भी बताया गया है जिस पर इन्होंनें कोई चर्चा नहीं की। अतः मनोविज्ञान का यह अर्थ भी अस्वीकार कर दिया गया।

**4. व्यवहार का विज्ञान :-** 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रुप में स्वीकार किया गया। और वर्तमान में मनोविज्ञान के इसी अर्थ को सर्वमान्य अर्थ के रूप में स्वीकार किया गया है। इस अर्थ के प्रबल समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोविज्ञानिक हैं।
मनोविज्ञान के अर्थ परिवर्तन को वुडवर्थ ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है :-
**“सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोडा, फिर अपने मन को त्यागा, फिर अपनी चेतना खोई और अब यह व्यवहार के ढंग को अपनाऐ हुए है।”**

 ****शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के मिलने से बना है, शिक्षा मनोविज्ञान। जिसका शाब्दिक अर्थ है, “शिक्षा से सम्बन्धित मनोविज्ञान”। शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान के संप्रत्ययों, सिद्धांतो तथा विधियों का प्रयोग शैक्षणिक परिस्थितियों को उन्नत बनाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करना ही शिक्षा मनोविज्ञान कहलाता है।

**शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषायें :-**
1. स्टीफन के अनुसार, “शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक विकास का क्रमिक अध्ययन है।”
2. क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, “शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है।”
3. स्किनर के अनुसार, “शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।”
4. कॉलसनिक के अनुसार, “मनोविज्ञान के सिद्धान्तों व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग ही शिक्षामनोविज्ञान कहलाता है।”
5. सॉरे व टेलफोर्ड के अनुसार, “शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य सम्बन्ध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है, जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक खोज से विशेष रूप से सम्बन्धित है।”

**UNIT 1**

 **शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र**

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के बारे में स्किनर ने लिखा हे की शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वह सभी ज्ञान तथा प्रविधियां से सम्बंधित है जो सीखने की प्रक्रिया को अच्छी प्रकार से समझाने तथा अधिक निपुणता से निर्धारित करने से सम्बंधित हैं। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञानिकों के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख क्षेत्र निम्न प्रकार है-

1. वंशानुक्रम

2. विकास

3. व्यक्तिगत भिन्नता

4. व्यक्तित्व

5. विशिष्ट बालक

6. अधिगम प्रक्रिया

7. पाठ्यक्रम निर्माण

8. मानसिक स्वास्थ्य

9. शिक्षण विधियाँ

10. निर्देशन एवं परामर्श

11. मापन एवं मूल्यांकन

12. समूह गतिशीलता

13. अनुसन्धान

14. किशोरावस्था

विभिन्न लेखकों ने शिक्षा मनोविज्ञान की भिन्न-भिन्न परिभाषाएं दी है। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा मनोवैज्ञानिक एक नया तथा पनपता विज्ञान है। इसके क्षेत्र अनिश्चित है और धारणाएं गुप्त है। इसके क्षेत्रों में अभी बहुत सी खोज हो रही है और संभव है कि शिक्षा मनोविज्ञान की नई धारणाएं, नियम और सिद्धांत प्राप्त हो जाये। इसका भाव यह है कि शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र और समस्याएं अनिश्चित तथा परिवर्तनशील है।

चाहे कुछ भी हो निम्नलिखित क्षेत्र या समस्याओं को शिक्षा मनोविज्ञान के कार्य क्षेत्र में शामिल किया जा सकता है। **क्रो एण्ड क्रो- ‘‘शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का संबंध सीखने को प्रभावित करने वाली दशाओं से है।’’**

1. व्यवहार की समस्या। 2. व्यक्तिगत विभिन्नताओं की समस्या। 3. विकास की अवस्थाएं।
4. बच्चों का अध्ययन। 5. सीखने की क्रियाओं का अध्ययन। 6. व्यक्तित्व तथा बुद्धि।
7. नाप तथा मूल्यांकन। 8. निर्देश तथा परामर्श।

**UNIT 1**

**शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ**

शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहारिक विज्ञान की श्रेणी में रखा जाने लगा है। विज्ञान होने के कारण इसके अध्ययन में भी अनेक विधियों का विकास हुआ। येविधियां वैज्ञानिक हैं। **जार्ज ए लुण्डबर्ग** के शब्दों में **‘‘सामाजिक वैज्ञानिकों में यह विश्वास पूर्ण हो गया है कि उनके सामने जो समस्याऐं है उनको हल करने के लिए सामाजिक घटनाओं के निष्पक्ष एवं व्यवस्थित निरीक्षण, सत्यापन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण का प्रयोग करना होगा। ठोस एवं सफल होने क कारण ऐसे दृष्टिकोण को वैज्ञानिक पद्धति कहा जाता है।’’**

शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन और अनुसंधान के लिए सामान्य रूप से जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है उनको दो भागों में विभाजित किया जासकता हैः-

**(१) आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Method):-**

 1.आत्मनिरीक्षण विधि 2.गाथा वर्णन विधि

**(२) वस्तुनिष्ठ विधियाँ (Objective Method):-**
 1.प्रयोगात्मक विधि 2.निरीक्षण विधि 3.जीवन इतिहास विधि 4.उपचारात्मक विधि 5.विकासात्मक विधि

 6.मनोविश्लेषण विधि 7.तुलनात्मक विधि 8.सांख्यिकी विधि 9.परीक्षण विधि 10.साक्षात्कार विधि

 11.प्रश्नावली विधि 12.विभेदात्मक विधि 13.मनोभौतिकी विधि

इनमें से कुछ प्रमुख विधियों का निम्नानुसर वर्णन किया गया है :-

**आत्म आत्म निरीक्षण विधि (अर्न्तदर्शन विधि)**
आत्म निरीक्षण विधि को अर्न्तदर्शन, अन्तर्निरीक्षण विधि भी कहते है। स्टाउट के अनुसार ‘‘अपना मानसिक क्रियाओं का क्रमबद्ध अध्ययन ही अन्तर्निरीक्षण कहलाता है।’’ वुडवर्थ ने इस विधि को आत्मनिरीक्षण कहा है। इस विधि में व्यक्ति की मानसिक क्रियाएं आत्मगत होती हे। आत्मगत होने के कारण आत्मनिरीक्षणया अन्तर्दर्शन विधि अधिक उपयोगी होती हे। लॉक के अनुसार - मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओंका निरीक्षण।’’

**परिचय :** पूर्वकाल के मनोवैज्ञानिक अपनी मस्तिष्क क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इसी विधि पर निर्भर थे। वे इसका प्रयोग अपने अनुभवों का पुनः स्मरण और भावनाओं का मूल्यांकन करने के लिये करते थे। वे सुख, दुख, क्रोध और शान्ति, घृणा और प्रेम के समय अपनी भावनाओं और मानसिक दशाओं का निरीक्षण करके उनका वर्णन करते थे।
**अर्थ : अन्तर्दर्शन का अर्थ है-** ‘‘अपने आप में देखना।’’ इसकी व्याख्या करते हुए बी.एन. झा ने लिखा है ‘‘आत्मनिरीक्षण अपने स्वयं के मन का निरीक्षण करने की प्रक्रिया है। यह एक प्रकार का आत्मनिरीक्षण है जिसमें हम किसी मानसिक क्रिया के समय अपने मन में उत्पन्न होने वाली स्वयं की भावनाओं और सब प्रकार की प्रतिक्रियाओं कानिरीक्षण, विश्लेषण और वर्णन करते है।’’
**गुण-** मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि : डगलस व हालैण्ड के अनुसार - ‘‘मनोविज्ञान ने इस विधि का प्रयोग करके हमारे मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि की है।’’
**अन्य विधियों में सहायक** : डगलस व हालैण्ड के अनुसार ‘‘यह विधि अन्य विधियों द्वारा प्राप्त किये गये तथ्यों नियमों और सिद्धांन्तों की व्याख्या करने में सहायता देती है।’’
**यंत्र व सामग्री की आवश्यकता :** रॉस के अनुसार ‘‘यह विधि खर्चीली नहीं है क्योंकि इसमें किसी विशेष यंत्र या सामग्री की आवश्यकता नहीं पड़ती है।’’
**प्रयोगशाला की आवश्यकता :** यह विधि बहुत सरल है। क्योंकि इसमें किसी प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं है। रॉस के शब्दों में ‘‘मनोवैज्ञानिकों का स्वयं का मस्तिष्क प्रयोगशाला होता है और क्योंकि वह सदैव उसके साथ रहता है इसलिए वह अपनी इच्छानुसार कभी भी निरीक्षण कर सकता है।’’

**जीवन इतिहास विधि या व्यक्ति अध्ययन विधि (Case study or case history method)**
व्यक्ति अध्ययन विधि का प्रयोग मनोवैज्ञानिकों द्वारा मानसिक रोगियों, अपराधियों एवं समाज विरोधी कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिये किया जाता है। ‘‘जीवन इतिहास द्वारा मानव व्यवहार का अध्ययन।’’ बहुधा मनोवैज्ञानिक का अनेक प्रकार के व्यक्तियों से पाला पड़ता है। इनमें कोई अपराधी, कोई मानसिक रोगी, कोई झगडालू, कोई समाज विरोधी कार्य करने वाला और कोई समस्या बालक होता है। मनोवैज्ञानिक के विचार से व्यक्ति का भौतिक, पारिवारिक व सामाजिक वातावरण उसमें मानसिक असंतुलन उत्पन्न कर देता है। जिसके फलस्वरूप वह अवांछनीय व्यवहार करने लगता है। इसका वास्तविक कारण जानने के लिए वह व्यक्ति के पूर्व इतिहास की कड़ियों को जोड़ता है। इस उद्देश्य से वह व्यक्ति उसके माता पिता, शिक्षकों, संबंधियों, पड़ोसियों, मित्रों आदि से भेंट करके पूछताछ करता है।

इस प्रकार वह व्यक्ति के वंशानुक्रम, पारिवारिक और सामाजिक वातावरण, रूचियों, क्रियाओं, शारीरिक स्वास्थ्य, शैक्षिक और संवेगात्मक विकास के संबंध में तथ्य एकत्र करता है जिनके फलस्वरूप व्यक्ति मनोविकारों का शिकार बनकर अनुचित आचरण करने लगताहै। इस प्रकार इस विधि का उद्देश्य व्यक्ति के किसी विशिष्ट व्यवहार के कारण की खोज करनाहै।

 **क्रो व क्रो** ने लिखा है **‘‘जीवन इतिहास विधि का मुख्य उद्देश्य किसी कारण का निदान करना है।’’**

**बहिर्दर्शन या अवलोकन विधि (Extrospection or observational method)**

बहिर्दर्शन विधि को अवलोकन या निरीक्षण विधि भी कहा जाता है। अवलोकन या निरीक्षण का सामान्य अर्थ है- ध्यानपूर्वक देखना। हम किसी के व्यवहारआचरण एवं क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं आदि को बाहर से ध्यानपूर्वक देखकर उसकी आंतरिक मनःस्थिति का अनुमान लगा सकते है। उदाहरणार्थः- यदि कोई व्यक्ति जोर-जोर से बोल रहा है और उसके नेत्र लाल है तो हम जान सकते है कि वह क्रुद्ध है। किसी व्यक्ति को हंसता हुआ देखकर उसके खुष होने का अनुमान लगा सकते हैं।

निरीक्षण विधि में निरीक्षणकर्ता, अध्ययन किये जाने वाले व्यवहार का निरीक्षण करता है और उसी के आधार पर वह विषय के बारे में अपनी धारणा बनाता है। व्यवहारवादियों ने इस विधि को विशेष महत्व दिया है।

कोलेसनिक के अनुसार निरीक्षण दो प्रकार का होता है- (1) औपचारिक और (2) अनौपचारिक।
औपचारिक निरीक्षण नियंत्रित दशाओं में और अनौपचारिक निरीक्षण अनियंत्रित दशाओं में किया जाता है। इनमें से अनौपचारिक निरीक्षण, शिक्षक के लिये अधिक उपयोगी है। उसे कक्षा और कक्षा के बाहर अपने छात्रों के व्यवहार का निरीक्षण करने के लिए अनेक अवसर प्राप्त होते है। वह इस निरीक्षण के आधार पर उनके व्यवहार के प्रतिमानो का ज्ञान प्राप्त करके उनको उपयुक्त निर्देशन दे सकता है।

**प्रश्नावली:**

**गुड तथा हैट (Good & Hatt)** के अनुसार **-‘‘सामान्यतः प्रश्नावली शाब्दिक प्रष्नों के उत्तर प्राप्त करने की विधि है,** जिसमें व्यक्ति को स्वयं ही प्रारूप में भरकर देने होते हैं। इस विधि में प्रष्नों के उत्तर प्राप्त करके समस्या संबंधी तथ्य एकत्र करना मुख्य होता है। प्रश्नावली एक प्रकार से लिखित प्रष्नों की योजनाबद्ध सूची होती है। इसमें सम्भावित उत्तरों के लिए या तो स्थान रखा जाता है या सम्भावित उत्तर लिखे रहते हैं।

**साक्षात्कार:**

इस विधि में व्यक्तियों से भेंट कर के समस्या संबंधी तथ्य एकत्रित करना मुख्य होता हैं इस विधि के द्वारा व्यक्ति की समस्याओं तथा गुणों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसमें दो व्यक्तियों में आमने-सामने मौखिक वार्तालाप होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्याओं का समाधान खोजने तथा शारीरिक और मानसिक दषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।गुड एवं हैट के शब्दों में - ‘‘किसी उद्देश्य से किया गया गम्भीर वार्तालाप ही साक्षात्कार है।

**प्रयोग विधि :**

‘‘पूर्व निर्धारित दशाओं में मानव व्यवहार का अध्ययन।’’ विधि में प्रयोगकर्ता स्वयं अपने द्वारा निर्धारित की हुई परिस्थितियों या वातावरण में किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है या किसी समस्या के संबंध में तथ्य एकत्र करता है।

**मनोचिकित्सीय विधि:**

‘‘व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन करके उपचार करना।’’ इसविधि के द्वारा व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन करके, उसकी अतृप्त इच्छाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है। तदुपरांत उन इच्छाओं का परिष्कार या मार्गान्तीकरण करके व्यक्ति का उपचार किया जाता है और इस प्रकार इसके व्यवहार को उत्तम बनाने का प्रयास किया जाता है।